



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 108]

नई दिल्ली, सोमवार, मार्च 4, 1985/फाल्गुन 13, 1906

No. 108]

NEW DELHI, MONDAY, MARCH 4, 1985/PHALGUNA 13, 1906

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

साथ और नागरिक पूर्ति मंत्रालय

(साथ विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 4 मार्च, 1985

का. आ. 176 (अ) :—केन्द्रीय सरकार ने, भारत सरकार के भूतपूर्व कृषि और सिंचाई मंत्रालय (साथ विभाग) की अधिसूचना सं. का. आ. 223 (अ), तारीख 28 मार्च, 1980 (जिसमें इसमें इसके पश्चात् उक्त अधिसूचना कहा गया है) द्वारा चीनी उपक्रम (प्रबन्ध ग्रहण) अधिनियम, 1978 (1978 का 49) की धारा 7 की उप-धारा (2) के साथ पठित, उप-धारा (1) के खण्ड (ख) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह घोषणा की थी कि 28 मार्च, 1980 के ठीक पूर्व प्रदत्त ऐसी सभी संविदाओं, समीति हस्तान्तरण-पत्रों, करारों, परिनिर्धारणों, पंचाटों, स्थायी आदेशों या अन्य लिखितों से प्रोद्भूत या उत्पन्न होने वाली सभी बाध्यताओं और दायित्वों का, जिनका सेकसगिया चीनी मिल्स लिमिटेड नामक उपक्रम जो उत्तर प्रदेश राज्य के गोंडा जिले में अभनाम में चीनी का विनिर्माण कर रही है, या उक्त चीनी उपक्रम का स्वामित्व रखने वाला व्यक्ति एक पक्षकार है या जो

उक्त चीनी उपक्रम या व्यक्ति को लागू हो, प्रवर्तन उक्त अधि-
के लिए निरन्तर रहेगा ;

और उक्त अधिसूचना की अधि, अधिसूचना सं. का. आ. 111(अ), तारीख 19 फरवरी, 1981 ; का. आ. 173(अ), तारीख 25 मार्च, 1982 ; का. आ. 196(अ), तारीख 22 मार्च, 1983 और का. आ. 181(अ), तारीख 21 मार्च, 1984 द्वारा 12 मार्च, 1985 तक, जिसमें यह तारीख भी सम्मिलित है, बढ़ा दी गई थी ;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त अधि-
सूचना की अधि 12 मार्च, 1986 तक, जिसमें यह तारीख भी सम्मिलित है, बढ़ा दी जानी चाहिए ;

अतः अब, केन्द्रीय सरकार, चीनी उपक्रम (प्रबन्ध ग्रहण) अधिनियम, 1978 (1978 का 49) की धारा 7 की उप-धारा (2) के साथ पठित उप-धारा (1) के खण्ड (ख) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, उक्त अधिसूचना की अधि को 12 मार्च, 1986 तक, जिसमें यह तारीख भी सम्मिलित है, बढ़ाती है ।

[फा सं. 13-1/84-एन एम. ग. (वि. 2)]

एन.आर. बनेजी, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF FOOD & CIVIL SUPPLIES

(Department of Food)

NOTIFICATION

New Delhi, the 4th March, 1985

S.O. 176(E).—Whereas by the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Agriculture and Irrigation (Department of Food) No. S.O. 223(E), dated the 28th March, 1980 (hereinafter referred to as the said notification), the Central Government in exercise of the powers conferred by clause (b) of sub-section (1) read with sub-section (2) of section 7 of the Sugar Undertakings (Taking Over of Management) Act, 1978 (49 of 1978), had declared that the operation of all obligations and liabilities accruing or arising out of all contracts, assurances of property, agreements, settlements, awards, standing orders or other instruments in force immediately before the 28th March, 1980, to which the undertaking known as the Seksaria Sugar Mills Limited, manufacturing sugar at Babhnan in the District of Gonda in the State of Uttar Pradesh, or the person owning the

said sugar undertaking is a party, or which may be applicable to the said sugar undertaking or the person, shall remain suspended for the said period;

And, whereas, the duration of the said notification was extended upto and inclusive of the 12th March, 1985 vide notification Nos. S.O. 111(E), dated the 19th February, 1981; S.O. 173(E), dated the 25th March, 1982; S.O. 196(E), dated the 22nd March, 1983 and S.O. 181(E), dated the 21st March, 1984;

And, whereas, the Central Government is satisfied that the duration of the said notification should be extended upto and inclusive of the 12th March, 1986;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by clause (b) of sub-section (1), read with sub-section (2) of section 7 of the Sugar Undertakings (Taking Over of Management) Act, 1978 (49 of 1978), the Central Government hereby extends the duration of the said notification upto and inclusive of the 12th March, 1986.

[File No. 13-1/84-NSU(Vol. II)]

N. R. BANERJI, Jt. Secy.